بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-05.05.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पवित्र कथनों की रोशनी में न्याय, उपकार एवं निकट सम्बंधियों को सहायता देने की विवेक पूर्ण व्याख्या।

पाकिस्तान के अहमदियों के लिए दुआ की तहरीक।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 05 मई 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः तथा सूरः नहल की आयत- إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيْتَآئِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इसका अनुवाद बयान फ़रमाया- कि अल्लाह निःसन्देह न्याय का, तथा उपकार का, एवं ग़ैर रिश्तेदारों को भी निकट सम्बंधियों के समान जानने और इसी तरह सहायता करने का आदेश देता है तथा हर प्रकार की अशलीलता तथा अनर्थ की बातों एवं विद्रोह से रोकता है, वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम समझ जाओ।

फ़रमाया- यह आयत हर एक जुम्अः तथा ईदों के दूसरे ख़ुत्बः में पढ़ी जाती है। इस पवित्र आयत में कुछ नेकियाँ करने तथा कुछ बुराईयों से बचने का वर्णन किया गया है, वास्तविक मोमिन की निशानी यह है कि वह अल्लाह तआला के आदेश एवं निर्देशों के अनुसार कर्म करे। इस आयत में जिन शुभ कर्मों का वर्णन किया गया है, अर्थात न्याय, उपकार एवं निकट सम्बंधियों को सहायता देना, इनके संदर्भ में आज मैं हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इरशाद पेश करूँगा। समस्त निर्देश प्रत्यक्षतः एक ही धुरी पर घूम रहे हैं फिर भी आप अलै. ने विभिन्न रंग में उपदेश दिए हैं।

ये कथन हमें हमारे जीवन अल्लाह तआला के आदेशानुसार व्यतीत करने की ओर हमारा मार्ग दर्शन करते हैं। यदि हम इन निर्देशों पर विचार करें तथा इनके अनुसार अपने जीवनों को ढालने का प्रयास करें तो

निश्चय ही हम अल्लाह तआला से भी अपना सम्बंध मज़बूत कर सकते हैं तथा आपस में भी एक दूसरे के अधिकारों की अदायगी अति सुन्दर रंग में कर सकते हैं।

अल्लाह तथा उसके बन्दों के हक़ की अदायगी ही वह रास्ता है जो समाज तथा विश्व स्तरीय शांति की गारंटी देता है किन्तु खेद है कि दुनिया इस ओर ध्यान नहीं दे रही तथा चाहे मुस्लिम देश हों अथवा शष दुनिया, सब एक दूसरे के अधिकारों का हनन करने में व्यस्त हैं। ऐसे में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वालों का कर्त्तव्य है कि वे अपना भी सुधार करें तथा दुनिया को भी इसकी ओर ध्यान दिलाएँ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- ख़ुदा का तुम्हें यह आदेश है कि तुम उसके साथ तथा उसके प्राणियों के साथ न्याय का मामला करो, अर्थात अल्लाह तथा उसके बन्दों के हक़ अदा करो तथा यदि इससे बढ़ कर हो सके तो न केवल न्याय बल्कि एहसान करो, अथात फ़र्ज़ से अधिक तथा ऐसे शुद्ध होकर अल्लाह तआला की बन्दगी करो कि मानो तुम उसको देखते हो। अधिकारों से बढ़ कर लोगों के साथ सद्व्यवहार करो तथा यदि इससे बढ़ कर हो सके तो ऐसे अकारण एवं निःस्वार्थ होकर ख़ुदा की उपासना तथा अल्लाह के बन्दों की सेवा करो कि जैसे कोई निकटता के जोश से करता है।

फिर इस आयत की रोशनी में ख़ुदा तआला के हक़ को और अधिक स्पष्ट करके बयान करते हुए आप अलै. फ़रमाते हैं- जैसा कि वास्तव में ख़ुदा के अतिरिक्त कोई उपासना का अधिकारी नहीं है, कोई भी स्नेह के योग्य नही है, कोई भी निर्भरता के योग्य नहीं है, क्यूँकि रचीयता होने तथा अनन्त होने एवं पालनहार होने के कारण यह अधिकार केवल उसी का है। यदि तुमने इतना कर लिया करो तो यह न्याय है जिसका ध्यान रखना तुम पर फ़र्ज़ है। फिर यदि इससे अधिक उन्नति करना चाहो तो उपकार का स्तर है, तथा वह यह है कि तुम उसकी महानता को ऐसा स्वीकार करो तथा उसके आगे अपनी उपासना में ऐसे शिष्टाचार वाले (भक्त) बन जाओ तथा उसकी मुहब्बत में ऐसे खोए जाओ कि मानो तुमने उसकी महानता एवं प्रकोप तथा अपतनकारी सुन्दरता को देख लिया है। तत्पश्चात निकट सम्बंधियों को अनुदान देने का स्तर है, तथा वह यह है कि तुम्हारी उपासना तथा तुम्हारी मुहब्बत और तुम्हारे आज्ञा पालन से पूर्णतः मिलावट एवं निष्छलता दूर हो जाए तथा तुम ऐसे जिगरी सम्बंध से उसे याद करो जैसे उदाहरणतः तुम अपने बापों को याद करते हो तथा तुम्हारी मुहब्बत उससे ऐसी हो जाए कि जैसे उदाहरणतः बच्चा अपनी प्यारी माँ से मुहब्बत रखता है।

फिर प्राणियों के अधिकारों के विषय में इस आयत का अर्थ बयान करते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- अपने भाईयों तथा मानव जाति से न्याय करो तथा अपने अधिकारों से अधिक उनक साथ कोई बदले की भावना न करो और न्याय पर क़ायम रहो। यदि इस स्तर की उन्नति करना चाहो तो इससे आगे एहसान का स्तर है, और वह यह है कि तू अपने भाई की बदी के मुक़ाबले पर नेकी करे, उसके अत्याचार के बदले में तुम उसको सहायता दो तथा सद्व्यवहार एवं उपकार के रूप में उसका सहयोग करो। फिर इसके बाद निकट सम्बंधियों को अनुदान देने का स्तर है, और वह यह है कि तू जितना अपने भाई से नेकी करे अथवा जितना मानव जाति के साथ सद्व्यवहार करे, उससे कोई एवं किसी प्रकार का बदला स्वीकार न हो

बल्कि प्रकृतिक रूप से निःस्वार्थ होकर वह तेरे द्वारा अमल में आए, जैसे निकटता के जोश से एक भाई दूसरे भाई के साथ भलाई करता है।

अतः यह नैतिक प्रगति का अन्तिम स्तर है कि प्राणियों की सहानुभूति में कोई स्वार्थ अथवा बदला अथवा कोई लाभ पाने की आशा बीच में न हो बल्कि भाईचारे एवं मानव स्नेह का जोश उच्च स्तर पर उन्नति कर जाए कि स्वयं बिना किसी कष्ट के एवं बिना किसी स्वार्थ अथवा आभार के अथवा दुआ या किसी अन्य प्रकार के बदले की भावना के वह नेकी केवल मानवीय जोश से प्रकट हो। फिर एक अवसर पर आप अलै. फ़रमाते हैं कि इस पवित्र आयत में अल्लाह तआला ने मानव प्रकृति के तीनों स्तर बयान कर दिए और तीसरे स्तर को व्यक्तिगत प्रेम का स्तर कहा है तथा यह वह स्तर है जिसमें समस्त स्वार्थ भस्म हो जाते हैं तथा दिल ऐसे स्नेह से भर जाता है जैसे शीशा इत्र से भरा हुआ होता है। इसी स्तर की ओर संकेत इस आयत में है कि मोमिन लोगों में से कुछ वे भी हैं कि अपने प्राण अल्लाह की प्रसन्नता के बदले बेच देते हैं तथा ख़ुदा ऐसों पर ही मेहरबान है।

फ़रमाया- ख़ुदा तुमसे क्या चाहता है, बस यही कि तुम मानव जाति के साथ न्याय किया करो, फिर इससे बढ़कर यह है कि उनसे भी नेकी करो जिन्होंने तुमसे कोई नेकी नहीं की, फिर इससे बढ़कर यह है कि तुम ख़ुदा के बन्दों से ऐसी सहानुभूति के साथ पेश आओ कि मानो तुम उनके वास्तविक रिशतेदार हो, जैसा कि माएँ अपने बच्चों के साथ व्यवहार करती हैं। क्यूँकि उपकार करने वाला कभी अपने उपकार को जतला भी देता है परन्तु वह जो माँ की भांति प्रकृतिक जोश से नेकी करता ह, वह कभी अहंकारो प्रदर्शन नहीं कर सकता। अतएव अन्तिम स्तर नेकियों का वह मानवीय जोश है जो माँ की तरह हो।

यह आयत न केवल प्राणियों से सम्बंधित है बल्कि ख़ुदा से भी सम्बंधित है। ख़ुदा से न्याय यह है कि उसकी अनुकम्पाओं को याद करके उसका आज्ञा पालन करना तथा ख़ुदा से उपकार यह है कि उसकी ज़ात पर ऐसा विश्वास कर लेना कि मानो उसको देख रहा है, तथा ख़ुदा स निकट सम्बंधियों को सहायता देना यह है कि उसकी उपासना न तो स्वर्ग के लालच से हो तथा न नर्क के भय से, बल्कि यदि मान लिया जाए कि न जन्नत है और न जहन्नम है तब भी जोशे मुहब्बत एवं आज्ञा पालन में अन्तर न आवे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अन्य धर्म वालों को इस्लाम की शिक्षा बताते हुए यह विषय कुछ स्थानों पर बयान फ़रमाया है। इसी तरह अपनी जमाअत को नसीहत करते हुए भी उसे व्याख्या के साथ समझाया है।

एक अवसर पर आप अलै. ने फ़रमाया कि न्याय की स्थिति यह है कि जो मुत्तक़ी की अवस्था तामसिक मनोवृत्ति के रूप में होती है उस अवस्था के सुधार के लिए न्याय का आदेश है, इसमें चेतना का विरोध करना पड़ता है। उदाहरणतः किसी का ऋण अदा करना, चेतना इसमें यही चाहती है कि किसी तरह से इसे दबा लूँ। फ़रमाया- मुझे कहते हुए बड़ा खेद है कि कुछ लोग इन बातों की चिंता नहीं करते तथा हमारी जमाअत में भी ऐसे लोग हैं जो अपने ऋणों को अदा करने में बहुत कम घ्यान देते हैं, यह न्याय के विरुद्ध है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो ऐसे लोगों की नमाज़ न पढ़ते थे। अतः तुमम से हर

एक इस बात को ख़ूब याद रखे कि क़र्ज़ों के कदा करने में सुस्ती नहीं करनी चाहिए तथा हर प्रकार के धोखे और बेईमानी से दूर भागना चाहिए क्यूँकि यह अल्लाह के आदेश के विरुद्ध है।

फ़रमाया- ख़ुदा तआला ने इन सारी भलाई पहुंचाने की रीतियों को स्थान एवं अवसर के साथ जोड़ दिया है और पवित्र आयत में साफ़ फ़रमा दिया कि यदि ये नेकियाँ अपने अपने अवसर एवं उचित स्थान पर प्रकट न होंगी तो फिर ये बुराईयाँ बन जाएँगी, न्याय अशलील बन जाएगा अर्थात सीमा को इतना लांघना कि अपवित्र अवस्था हो जाए और ऐसा ही उपकार के इंकार का रूप निकल आएगा अर्थात वह रूप जिससे बुद्धि एवं चैतन्य इंकार करता है और निकट सम्बंधी को अनुदान देने के बजाए विद्रोह बन जाएगा अर्थात वह अकारण सहानुभूति का जोश एक बुरी अवस्था पैदा करेगा। वास्तव में बग़ी उस वर्ष को कहते हैं जो सीमा से अधिक बरस जाए तथा खेतों को नष्ट कर दे, तथा उचित अधिकार में कमी करने को बग़ी कहते हैं अथवा उचित अधिकार को बढ़ाना भी बग़ी है। अर्थात इन तीनों में अवसर एवं अवस्था की शर्त लगा दी है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तकों तथा गोष्ठियों में इसके संदर्भ में अत्यधिक सचेत किया है। अतएव हमारा कर्त्तव्य है कि अल्लाह तआला से सम्बंध का उच्च स्तर प्राप्त करने तथा बन्दों को उनके अधिकार देने के लिए इनके अनुसार कर्म करने का प्रयास करें। अल्लाह तआला हमें इनके अनुसार जीवन व्यतीत करने, उपासना के उच्चतम स्तर प्राप्त करने, बन्दों के अधिकार, विशेषतः आपस में प्यार मुहब्बत के सम्बंधों को इस प्रकार स्थापित करने का सामर्थ्य प्रदान करे कि हम दुनिया के लिए उदाहरण बन जाएं, इन बातों पर अमल करते हुए हम बैअत का हक़ अदा करने वाले हों। हर जुम्अः हमें इन बातों को सुनकर इन पर अमल करने वाला बनाए अन्यथा हममें तथा ग़ैरों में कोई अन्तर नहीं रहेगा। अल्लाह तआला हममें तथा ग़ैर में एक स्पष्ट अन्तर दिखा दे जिस तरह कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बड़े दर्द से इसको अभिव्यक्त किया है।

अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- पाकिस्तान के हालात के लिए भी दुआ करते रहें, हमने तो नेकियाँ फैलाने के लिए अपना काम करते चले जाना है तथा शैतानी प्रकृति के लोगों ने अपने अत्याचार, जो इनका काम है, वे दिखाते रहना है। हमारा तो इन शैतानों से शैतानी की अवस्था में कोई मुक़ाबला नहीं, हमें तो यही है कि अल्लाह तआला के आदेशों पर चलने वाले हों। सदैव यह दुआ भी करें कि अल्लाह तआला हमारे ईमानों को सलामत रखे तथा कभी हमारे ईमान विचलित न हों। अल्लाह तआला से हमारा वह सम्बंध पैदा हो जाए जो निकट के रिशतेदारों की सहायता करने का सम्बंध है फिर हम अल्लाह तआला की कृपाओं के दृश्य भी पहले से बढ़ कर देखेंगे, इन्शाअल्लाह तआला। और जो दुश्मन हैं अल्लाह तआला की नज़र में तथा सुधरने योग्य नहीं हैं अल्लाह तआला की दृष्टि में, अल्लाह तआला इन्हें स्वयं नष्ट करे और इन्शाअल्लाह जब ऐसी अवस्था होगी, जब हमारा सम्बंध अल्लाह तआला से होगा तो दुश्मन के विनाश के दृश्य भी हम देखेंगे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652
टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131